24

27 AUG 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-XIV/VI (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL14/6**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27/08/19

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

1	1	3	4	5	1	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!

वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।

तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।

तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।

मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।

ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

चलती हुई ब्रजभाषा को साहित्यिक आधार प्रदान करने वाले सूरदास ने शृंगार के तीनों पक्षों को - वात्सल्य, सख्य एवं दाम्पत्य को अपने काव्य का आधार बनाया।

प्रस्तुत पद्यांश, जो आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत है, वे गोपियाँ उद्धव से वार्ता करती है।

गोपियाँ कहती है कि हे उद्धव हमारी एक बात सुनो। वह मथुरा एक काजल की कोठरी के समान है, जहाँ से आने वाला हर व्यक्ति रंग में श्याम है अर्थात् नीरसता से युक्त है।

हमारी आँखों को कृष्ण की सुनहरी छवि भा गई है, जिसके ये अधिक पीड़ा ग्रस्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुम्हे देखकर ऐसा लगता है, जैसे नीले रंग में डुबोया हो, और उससे यमुना नदी का पानी भी श्यामवर्णी हो गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य सौंदर्य -

भाषा - ब्रजभाषा
छंद - लीलापद
रस - शांत
अलंकार - उपमा

भाव सौंदर्य -

(क) गोपियों के माध्यम से सूरदास ने ग्रामीण-शहर द्वंद्व का बहुत अच्छा चित्र खींचा है।

(ख) गोपियाँ अन्यत्र भी कृष्ण को उलाहना देती है -

" हरि है राजनीति पढ़ि आये.
इक अति. चतुर हुते पहले ही
अब करि नेह दिखाये।"

(ग) प्रकृति को कविता के मैं का हिस्सा बनाना तथा उसे कोमलकांत रूप में दर्शाना सूर की निपुणता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संस्कृत के औदात्य एवं मधुरता से अवधी को सुशोभित करने वाले तुलसीदास ने 'दास्यभक्ति' के द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम राम की स्तुति की और रामचरित मानस के माध्यम से रामकथा को लोकग्राही बनाया।

प्रस्तुत पद्यांश, रामचरित मानस के सुन्दरकांड से लिया गया है, जिसमें हनुमान के लंका गमन एवं रावण की सभा का वर्णन है।

रावण जैसे ही सभा में आता है, सभी मंत्रीगण उसकी स्तुति करते है। उचित अवसर देखकर विभीषण ने बड़े भाई को नमस्कार किया और कहा कि संसार में जो अपना कल्याण चाहता है, उसका यश-कीर्ति चहुंओर होती है।

किन्तु पर स्त्री को हरण कर आपने बहुत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बड़ी गलती की है क्योंकि वे श्रीराम सभी लोकों के स्वामी है। आप उनकी शरण में जाओ वे अवश्य आपका उद्धार करेंगे।

काम, क्रोध, घमंड, लोभ ये सभी दुष्कर्म एवं नरक के साधन है। इनका त्याग कर स्वामी राम के चरणों की वंदना करो।

काव्यपक्ष -

भाषा - तत्सम अवधी
छंद - चौपाई एवं दोहा
अलंकार - अनुप्रास

संवेदनापक्ष -

(क) काम, क्रोध, लोभ को तुलसी ने नरक का मार्ग माना है, जो सभी धर्मों का मूल है।

(ख) सभा में विभीषण का अनुशासन, एक सभ्य-सुशील मंत्रिपरिषद के लिए अनुकरणीय है।

(ग) तुलसी ने राम के प्रति 'दास्य भक्ति' का यह भाव अन्यत्र भी प्रकट किया है

" राम सो बड़ो है कौन,
मोसो कौन छोटो।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।
नरनाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मनभावत पायो न कैं।
'तुलसी' कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयाल सुनैं।
जेहि देह सनेह न रावरे सों अस देह धराइ कै जाय जियैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरदास के विपरीत दास्यभक्ति को अपना आधार बनाकर राम की स्तुति करने वाले तुलसी ने कवितावली के उत्तरकांड में कलयुग तथा राम-राज्य की कल्पना की है।

उक्त पद्यांश में तुलसी ने राम की दास्य भाव से स्तुति की है।

तुलसी कहते है कि दसरथ के पुत्र दानी तथा ~~सिसेमनि~~ शिरोमणि, पुराणों में प्रसिद्ध एवं जिसकी ख्याति मैंने सुनी है वे राम ही है।

सभी मनुष्य, असुर, देवता सभी उनकी प्रशंसा एवं स्तुति करते है। हे प्रभु ! मैं (तुलसी) आपसे विनती करता हूं।

है कृपानिधि मेरी विनती सुनिये। जिस हृदय में आपके प्रति प्रेम न हो वह देह धारण करने योग्य नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

(क) तुलसी ने दास्यभक्ति का यही रूप अन्यत्र भी प्रकट किया है।

" राम सो खरो है कौन,
मोसो कौन खोटो ।"

(ख) तुलसी ने अधिकांशत: अवधी का प्रयोग किया है किन्तु कवितावली ब्रजभाषा में रचित है।

(ग) कवितावली में तुलसी ने रामराज्य तथा कलयुग की अवधारणा का प्रतिपादन किया है।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश में भक्ति रस का संचार है।

(ङ) छंद - सवैया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहिं परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बिहारीलाल ने रीतिकालीन मानसिकता के अनुरूप दैहिक प्रेम एवं भौगमूलक शृंगार को भावों की समाहार क्षमता एवं भाषा की समास क्षमता के साथ सम्मिश्रण करते हुये बिहारी सतसई में प्रकट किया है।

प्रस्तुत दोहा जगन्नाथ रत्नाकर द्वारा संकलित बिहारी रत्नाकर से लिया गया है, जिसमें बिहारी की राजनीतिक चेतना की झलक है।

बिहारी राजा जयसिंह के राजकाज पर ध्यान देकर एक कुमारी के प्रेम जाल में फँसने पर उन्हे समझाते हुये कहते है -

अभी वह केवल कली के समान ही है, उसमें न तो पराग है और न ही मधु का विकास हुआ है और तुम अभी उसी पर इतनी आसक्ति से मोहित हो गये हो, अब आगे क्या होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① अपनी दैहिक शृंगारिक कविताओं के इतर बिहारी ने अपनी सशक्त राजनीतिक चेतना का परिचय दिया है, जो दर्शाता है कि उनकी कलम गिरवी नहीं थी।

② इसी तरह की राजनीतिक चेतना का प्रयोग आधुनिक कबीर नागार्जुन के यहाँ भी दिखाई देता है -

" इंदु जी, इंदु जी क्या हुआ आपको।
सत्ता के नशे में भूल गई बाप को।"

③ नारी सौंदर्य का ऐसा ही वर्णन बिहारी ने अन्यत्र भी किया है -

" अंग - अंग नग जगमगति,
दीपशिखा सी देह।"

④ काव्य सौंदर्य

भाषा - ब्रजभाषा
छंद - दोहा
अलंकार - अनुप्रास, उपमा
रस - शांत, शृंगार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संसार में कविता अनेकों क्रांतियाँ है कर चुकी,
मुरझे मनों में वेग की विद्युत्प्रभाएँ भर चुकी।
है अन्ध-सा अन्तर्जगत कवि-रूप सविता के बिना,
सद्भाव जीवित रह नहीं सकते सु-कविता के बिना।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का काव्य नवजागरण चेतना के दोनों तत्वों 'आत्मगौरव तथा आत्म- आलोचना से युक्त है।

प्रस्तुत पद्यांश 'उनकी कालजयी कविता 'भारत- भारती' से ली गया है, जिसमें कविता के महत्व का प्रतिपादन है।

कवि कहते है कि कविता का महत्व केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है बल्कि कविता के दम पर संसार में अनेक क्रांतियाँ हो चुकी है। कविता ने ~~अनेक~~ अनेक वीर मनों में क्रांति चेतना पैदा की है।

यदि कविता बाह्य वातावरण से कटकर केवल आंतरिकता का बोध कराये तो वह श्रेष्ठ नहीं है, क्योंकि कविता अपने माध्यम से लोगों में सद्भावना का संचार करती है, जो उसे श्रेष्ठ बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कला पक्ष -

भाषा - तत्समी खड़ी बोली

शब्दशक्ति - अभिधा

रस - शांत

भाव पक्ष -

(क) गुप्त जी ने अन्यत्र भी कहा है कि कविता केवल मनोरंजन का साधन नहीं है -

" मनोरंजन न केवल कवि का,
कर्म होना चाहिए।"

(ख) रीतिकालीन मनोरंजक कविता पर वे कटाक्ष करते हैं -

" करते रहोगे पिष्ट पेषण,
और कब तक कविवरों।"

(ग) भारत-भारती के माध्यम से उन्होंने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई बल्कि हिन्दी के प्रचार - प्रसार में भी भूमिका निभाई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर संश्लिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं। एक ओर उनका काव्य सामाजिक विद्रूपता को उघाड़ता है, वहीं दूसरी ओर ईश्वर भक्ति भी उपस्थित है।

चूंकि कबीर तत्कालीन शास्त्रार्थ से अनभिज्ञ थे और उनके उलाहाऊ ~~कथ्य~~ तथ्यों से परे थे। अतः उन्होंने सिद्ध-नाथ परम्परा से चली आ रही जाति-धर्म-वर्ण की व्यवस्था पर चोट करने की परम्परा को अधिक कठोरता प्रदान की।

कबीर का काव्य किसी धर्म से जुड़ाव न रखते हुये सभी धर्मों में उपस्थित आडम्बरों को समान रूप से प्रकट करता है। ~~उस~~ उनके व्यंग्य एवं तर्क इतने सटीक एवं पैने हैं कि सामने उपस्थित व्यक्ति उनका खंडन नहीं कर सकता।

हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म के आडम्बरों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का समान रूप से खंडन किया।

" मूंड मुंडाये हरि मिले, सब कोय लेय मुंडाय
बार-बार के मूँडते, भेड़ न बैकुंठ जाय।"

" कांकर-पाथर जोरि कै, मस्जिद लई बनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।"

वे जाति व्यवस्था द्वारा पैदा किये गये विभेद से भी दुखी है और जाति व्यवस्था पर कठोर चोट करते है। उनके अनुसार केवल ईश्वर के भक्त नामक एक ही जाति है, जिसमें सब बराबर है।

" जाति-पाँति पूछे नहीं कोई
हरि को भजे, सो हरि का होई।"

तत्कालीन समय में सबसे बड़ी समस्या थी साम्प्रदायिक तनाव। दो संस्कृतियों के मिलन ने एक अजीब सा माहौल पैदा किया, जिसे अमीर खुसरो ने, खुसरो दरिया प्रेम की, के माध्यम से मिठास में परिवर्तित करने का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयास किया।

कबीर ने इस तनाव से पीड़ित व्यक्तियों को राहत देते हुये, तत्कालीन दोनो धर्मों को सुधार का मार्ग प्रदान किया।

"हिन्दू कहत है, राम हमारा मुसलमान रहमाना
आपस में दोऊ लड़ते, मरम कोउ नहीं जाना।"

किन्तु कबीर के अलावा भक्तिकाल के लगभग सभी कवियों ने शोषित-पीड़ित व्यक्तियों के संदर्भ में काव्य की रचना करते हुये उन्हे समर्थन प्रदान किया।

- जाति ओछा, पाँति ओछा, ओछा जनम हमारा
(रैदास)

- खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज नहीं, चाकर को चाकरी।"
(तुलसी)

- राजनीति की रीति सुनौ हो,
अरि बरिचर खेत (सूरदास)

इस प्रकार स्पष्ट है कि भले ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर ने राम के सब जीव है, कीरी कुंजर दोय के द्वारा सभी मानवों की समानता पर बल दिया किन्तु भक्तिकाल के सभी कवियों ने पीड़ित- शोषक वर्ग की आवाज को सहारा प्रदान किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

निराला उत्कृष्ट प्रयोगों एवं संश्लिष्ट अर्थबोधन के कवि है, जो किसी विचारधारा में न बंधकर समय के अनुसार प्रसंग का चयन एवं विस्तार करते है।

'राम की शक्तिपूजा' ~~भली~~ भले ही बाहरी कलेवर में आध्यात्मिक प्रतीत होती हो किन्तु उसका मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना से जुड़ता है।

निराला ने बड़े ही सधे ढंग से तत्कालीन स्वतंत्रता आन्दोलन को अपनी कविता का हिस्सा बनाया है। असहयोग आन्दोलन एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बावजूद ब्रिटिश शासन से मुक्त न हो पाना, 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' का प्रतीक है।

इसी कारण गांधी जी एक अजीब 'अमानिशा' तथा 'रवि हुआ अस्त' जैसी स्थिति से युक्त है। यह स्थिति धीरे-धीरे उनमें संशय का भाव प्रकट कर रही है -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा।
फिर-फिर संशय।"

किन्तु निराला ने गांधी जी को इस निराशा से उबारते हुये, स्वतंत्रता आन्दोलन को नवीन दिशा प्रदान की। वे उन्हे नवीन राह अपनाने की सलाह देते है।

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर
छोड़ दो समर, जब तक न हो सिद्धि रघुवर।"

इसी राह पर आगे बढ़ते हुये, जब गांधी जी ने / स्वतंत्रता सेनानियो ने भारत-छोड़ो आन्दोलन प्रारंभ किया, तो उन्हे सफलता प्राप्त होने लगी। तब वे उन्हे आत्मविश्वास से युक्त करते हुये कहते है-

"वह एक और मन रहा राम का
जो न थका।"

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' शुरू से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्त तक राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को प्रतिबिम्बित करती है। भले ही राष्ट्रीय आन्दोलन का रोजनामचा न हो किन्तु तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना के प्रवाह में यह कविता सफल रही।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।'- इस कथन को ध्यान में रखते हुए सूरदास की अलंकार-योजना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास ने वात्सल्य के तीनों पक्षों का प्रयोग अपने काव्य में किया है किन्तु कृष्ण-गोपी श्रृंगार से युक्त भ्रमरगीत उनकी विशेषता है।

आचार्य शुक्ल ने उनके काव्य में प्रयुक्त अलंकार योजना की आलोचना करते हुये लिखा है कि - 'सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते है।"

सूरदास ने अपने काव्य में अलंकार का बेहद सधा हुआ प्रयोग किया है। उन्होंने शब्दालंकार के साथ-साथ अर्थालंकार का भी प्रयोग किया है -

शब्दालंकार -

निरखति अंक स्याम सुंदर के. बारम्बार लावति छाती।
लोचन जल ^कागद^ मसि मिलि कै. द्वै गई स्याम-स्याम की पाती।।'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अर्थालंकार -

- काहे को रोकत मारग सूधो (सांग रूपक)

- आयो घोष बडो व्यापारी (रूपक)

- बिनु पावस ऋतु, हमपै पावस ऋतु आई (विभावना)

~~किन्तु~~ सूरदास की अलंकार योजना की प्रशंसा करते हुये आचार्य द्विवेदी जी ने लिखा है कि - सूर जब काव्य रचते है, तो अलंकार शास्त्र उनके सामने हाथ जोडकर खडा हो जाता।"

किन्तु सूरदास के द्वारा अलंकार का कही - कही अति प्रयोग भी किया गया है, जिससे उसमें कृत्रिमता का बोध होने लगा है।

सूरदास ने लगभग एक लाख पदों की रचना की और उनमें कई प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया किन्तु कहीं - कही एक ही प्रतीक को पुनः प्रयोग किया है।

जैसे एक उदाहरण में वे जहाज के पंछी का प्रयोग करते है किन्तु अन्यत्र वे उसी का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

lease do not write
ything except the
uestion number in
is space)

प्रयोग बसीत्र के खग के रूप में करते है।
आचार्य शुक्ल ने रसी कृत्रिमता के कारण उनकी
अलंकार योजना की आलोचना की है

इस प्रकार स्पष्ट है कि सूरदास की
अलंकार योजना कुछ सीमाओं के बावजद श्रेष्ठ है।

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राम की शक्तिपूजा' में निहित द्वंद्वात्मकता का उद्घाटन करते हुए उसके महत्त्व का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) असाध्य वीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है। इस मत के परिप्रेक्ष्य में असाध्य वीणा की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय की निरीश्वरवाद से ईश्वरवाद की यात्रा में सर्जन शक्ति का आह्वान - असाध्य-वीणा में संप्रेषित हुआ है। इस कविता में वे सर्जन शक्ति की महत्ता स्पष्ट करते है।

असाध्य वीणा जब से निर्मित हुई है, तब से मौन है, और उसे कोई भी ज्ञानी-गुणी नहीं साध सका है। राजा भी प्रियंवद से यही कहता है -

हार गये मेरे सब कलावन्त,
सबकी विद्या हो गई अकारथ,
कोई ज्ञानी गुणी इसे न साध सका।"

इसी तरह प्रियंवद जब वीणा को साधने का प्रयास करता है, तो वह भी मौन साधना के द्वारा वीणा को साधने का प्रयास करता है।

"उस संपदित सन्नाटे में मौन प्रियंवद,
साध रहा था वीणा।
नहीं, स्वयं को शोध रहा था।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वीणा से संगीत की उत्पत्ति होने की स्थिति भी मौन ही है, क्योंकि वीणा के द्वारा प्रियंवद उसकी प्राचीन संगीत की विरासत तक पहुँचता है, जो आंतरिकता में संगीतमय है

"अवतरित हुआ संगीत
स्वयंभू,
जिसमें सोता है,
अखण्ड ब्रह्म का
मौन।"

वीणा से संगीत की उत्पत्ति के बाद उसका प्रभाव भी मौन ही है, क्योंकि उसने प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्वधर्म से परिचय कराया। वीणा ने व्यक्ति को उसके मूल व्यक्तित्व से मिलाया और उसका प्रभाव युगान्तकारी रहा।

वीणा के वादन का श्रेय भी प्रियंवद ने उस अखंड ब्रह्म को दिया, जो सदैव मौन रहकर भी सभी संगीत, ध्वनियों का सृजक है। प्रियंवद ने वीणा के साधने की प्रक्रिया में उस अखंड मौन ब्रह्म का अनुभव किया -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"श्रेय मेरा नहीं कुछ
वह तो उस सबकुछ की तथता थी.
!
वह महामौन
जो सबमें गाता है।"

वीणा से स्वर की उत्पत्ति के पश्चात् पद पुनः शांत हो गई और अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रही।

इस प्रकार स्पष्ट है कि असाध्य वीणा <u>मौन से स्वर</u> तथा <u>स्वर के मौन</u> की यात्रा है, जिसके मौन एवं स्वर का प्रभाव युगान्तकारी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-भारती' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की भविष्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मैथिलीशरण गुप्त सच्चा राष्ट्रीय चेतना के कवि है। नवजागरण के आत्मगौरव एवं आत्म-आलोचना के साथ उनका काव्य भविष्य का भी विश्लेषण करता है।

गुप्त जी ने भारत-भारती में भारत के श्रेष्ठ प्राचीन को व्यक्त किया, तो साथ ही वर्तमान दुर्दशा के कारणों की भी खोज की है किन्तु उनकी विशिष्टता भविष्य का सूक्ष्म विश्लेषण रही है -

'हम कौन थे, क्या हो गये, क्या होंगे अभी,
आओ मिलकर विचारें समस्याएँ सभी।"

गुप्त जी ने एक तत्कालीन समय की सभी समस्याओं का चित्रण करने के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। वे तत्कालीन साम्प्रदायिकता, जो ब्रिटिश फूट डालो और राज करो से पोषित थी, को सबसे बड़ी चुनौती मानते हैं वे सलाह देते हुये कहते है कि भले ही हमसे पूर्व में त्रुटियाँ हुई है किन्तु सुधर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भविष्य समन्वय - मेल जोल से होगा।

" दिल मिलकर चलो। ~~तभी~~ यात्रा सुखद होगी तभी,
पीछे जो होना ~~है~~ था, हो गया। अब सामने देखो सभी।"

उनकी भविष्य दृष्टि की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह वर्तमान में भी उसी प्रासंगिकता से ~~युक्त~~ युक्त है, क्योंकि उन्होंने शिक्षा, विज्ञान, उद्योग सभी को अपनी लेखनी का हिस्सा बनाया।

शिक्षा में व्याप्त साम्प्रदायिकता के लिए वे कहते हैं कि यह 'साम्प्रदायिक शिक्षा हमारे किसी काम की नहीं'। साथ ही विज्ञान-तकनीकी को बढ़ावा देने पर भी बल देते हैं-

" साहब योरोपियन हिस्ट्री हमें अब न दिखलाइये,
रचना बैलून की कृपा कर सिखलाइये।"

उद्योगों को महत्त्व देकर गरीबी-बेरोजगारी ~~दूर~~ दूर करने का आधुनिक विचार 100 वर्ष पूर्व गुप्त जी ने प्रकट किया था। वे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत से कच्चे माल निर्यात से दुखी थे और यही उत्पादन द्वारा विकास को महत्व देते थे।

~~जो देश कच्चा माल निर्यात कर निर्भर है.~~

~~उदाहरण~~

" अब तो उठो बंधुओ, निज देश की जय बोल दो,
बनने लगे वस्तुएँ यहाँ, कल-कारखाने खोल दो।"

सारांशतः स्पष्ट है कि गुप्त जी की भविष्य दृष्टि एक ऐसे भारत का निर्माण करने की थी, जो अपने प्राचीन सोने की चिड़िया के गौरव को पुनः प्राप्त कर सके।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कामायनी में निहित 'बिंब-सौंदर्य' का उद्घाटन कीजिये। 15

कामायनी आधुनिक युग का एकमात्र भावप्रधान महाकाव्य है, जिसमें जयशंकर प्रसाद ने प्रकृति की कोमलकांतता, एवं छायावादी प्रेम को अपने दर्शन के साथ प्रकट किया है।

आचार्य शुक्ल ने <u>कविता क्या है</u> निबंध में भाषा के प्रतिमान स्पष्ट करते हुये लिखा था- कविता में केवल अर्थग्रहण ही नहीं, बिंबग्रहण भी अपेक्षित है।

इसी आधार पर कामायनी का विश्लेषण करने पर स्पष्ट है कि कामायनी में <u>स्थिर</u>, <u>गतिशील</u>, <u>संश्लिष्ट</u> सभी प्रकार के बिम्बों का समावेश किया गया है।

चूंकि बिम्ब से कविता का आस्वादन-क्षमता बढ़ जाती है, इसलिए प्रसाद ने बिम्ब-क्षमता का उपयोग सधे ढंग से किया है।

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

एक पुरुष भीगे नयनों से.
देख रहा था प्रलय प्रवाह।"

उन्होंने प्रकृति की सौंदर्य क्षमता का वर्णन करते हुये कहीं - कहीं उसे मानवीकरण करने का प्रयास किया है। साथ ही प्रकृति की जटिलताओं को भी बिम्बों के द्वारा प्रकट किया है।

द्रष्टव्य है -

" दिशाओं से धूम उठे.
या जलधर उठे क्षितिज तट के.
सघन गगन में भीम प्रकंपन,
झंझा के चलते झटके।"

स्थिर बिम्ब का प्रयोग करना व एवं उसे वास्तविकता प्रदान करना, प्रसाद की विशेषता है, यह विशेषता कामायनी में कई स्थानों पर अभिव्यक्त हुई है -

" शांत योगी सा, लो-चार देवदारु खड़े।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रसाद ने कामायनी में अपनी साहित्यिक क्षमताओं का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सार्थक प्रयोग किया है। इन्हीं का सम्मिश्रण कामायनी को महाकाव्य के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) बिलैती कपड़ा के पिकेटिंग के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिंग के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव? चानमल मड़बाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को रखने के लिये सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है।

आंचलिकता के पुट को बनाये रखते हुये अंचल के यथार्थ को ज्यों का त्यों प्रकट करना अर्थात् सभी रूपों फूल। शूल। धूल। गुलाब एवं कीचड़ कुरूपता। सुन्दरता एवं चन्दन को फणीश्वर नाथ रेणु ने मैला आँचल में प्रकट किया है।

प्रस्तुत गद्यांश में रेणु ने मेरीगंज की राजनीतिक स्थिति का चित्रण किया है।

एक पात्र बालदेव से कहता है कि जिस समय विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया था, उस समय चानमल के बेटे सागरमल ने जो किया वो तो याद होगा।

उसने सभी कार्यकर्ताओं को पीटा था। सरकारी खर्च पर कार्यकर्ता रखे गये थे। आज वही सागरमल कांग्रेस में एक बड़ा पद धारण किया हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

(क) प्रस्तुत गद्यांश की भाषा आंचलिकता से युक्त बिहारी हिन्दी के समान है।
जैसे - ~~जेहल~~ बिलैती

(ख) विदेशी शब्दों का स्वदेशी में (देशज) रूपान्तरण हुआ है।
जैसे - जेल > जेहल

(ग) ग्रामीण राजनीतिक चेतना को प्रकट करने का प्रयास किया गया है।

(घ) उक्त गद्यांश में एक भाव यह स्पष्ट है कि पहले कांग्रेस विरोधी रहे लोग। अब उच्च पदों पर आसीन है, जो वर्तमान दलबदल राजनीति का आरंभिक चरण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ। फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिये वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश ने ऐतिहासिकता के आलोक में वर्तमान की समस्याओं, संबंधों की यंत्रणा को अकेलेपन में सेलते लोगो तथा लघुमानववाद एवं विसंगतिबोध को 'आषाढ़ का एक दिन' में प्रकट किया है।

प्रस्तुत गद्यांश में इसी विसंगतिबोध का चित्रण है, जो व्यक्ति के अप्रामाणिक होते जाने को दर्शाता है।

मल्लिका कहती है कि माँ (अम्बिका) मैं तुम्हारे दुःख का कारण जानती हूँ किन्तु फिर भी मुझे इसमें अपराधबोध नहीं होता।

मैंने एक भावना से प्रेम किया और इसी भावना को धारण करती हूँ। मैं उसी कोमल, पवित्र, अनश्वर भावना से प्रेम करती हूँ।

भावपक्ष -

(क) इन पंक्तियों में मोहन राकेश ने छायावादी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्लेटोनिक प्रेम को चित्रित किया है।

(ख) प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' एवं गोदान में मेहता- मालती प्रसंग में भी इसी छायावादी प्लेटोनिक प्रेम का चित्रण है -

" मेरे इस जीवन के देवता, उस
जीवन के प्राप्य।" - (स्कंदगुप्त)

(ग) अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

कला पक्ष

भाषा - तत्समी खड़ी बोली

(अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव के कारण भाषा प्रतीकात्मक हो गई है।)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्त्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी-अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं? उंह। जो कुछ हो, हम साम्राज्य के एक सैनिक हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद सामाजिक - राष्ट्रीय चेतना के रचनाकार है। राष्ट्रीयता के साथ प्रकृति की कोमलकांतता एवं नारी तुम केवल श्रद्धा हो के भाव के साथ अपने प्रत्यभिज्ञा दर्शन की स्थापना करते है।

प्रस्तुत गद्य, जो स्कन्दगुप्त से लिया गया है, में स्कन्दगुप्त अधिकार सुख को निस्सार बताता है।

स्कन्दगुप्त कहता है कि अधिकार प्राप्ति एवं उससे प्राप्त होने वाला सुख मनुष्य से किसी अनचाही प्राप्ति के लिए बेगार की भाँति लगातार कार्य करवाता है।

वे उत्सवों में नाच-गान करने वाले एवं युद्ध में ढाल से, अधिकार लोलुप मनुष्य की तुलना करते है करते है कि परिचारक एवं ढाल मजबूरी में प्रयुक्त किये जाते है, उसी तरह अधिकार केवल व्यक्ति को मजबूर बनाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कला पक्ष -

भाषा - तत्समी खड़ी बोली

रस - शांत रस

शब्द शक्ति - अभिधा

संवेदना पक्ष .

(क) स्कन्दगुप्त अन्यत्र भी इसी तरह अधिकार से रहित होना चाहता है -

" बौद्धों सा निर्वाण, पागलों सी सम्पूर्ण विस्मृति एवं योगियों सी समाधि। "

(ख) प्रसाद ने अपने दर्शन को (छायावादी दर्शन) को स्पष्ट किया है।

(ग) स्कन्दगुप्त का पात्र तत्कालीन स्वतंत्रता सेनानियों से मेल खाता है, जो बिना किसी अधिकार सुख के स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहे थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

तत्कालीन समस्याओं को उठाते हुये, मार्क्सवाद के स्थूल प्रक्षेपण से बचते हुये समस्याओं की निरन्तरता की खोज यशपाल कृत दिव्या में प्रकट है।

उक्त गद्यांश में मारिश, दिव्या को असफलता से घबराने की बजाय आगे बढ़ने को कहते है।

मारिश कहता है कि जीवन के एक पक्ष में विफल होकर जीवन से मोह भोड़ लेना उचित निर्णय नहीं है।

जीवन अनन्त है और उसमें एक पक्ष को लेकर हम निष्कर्ष नहीं निकाल सकते। यदि जीवन अनन्त है, तो हमारी दृष्टि एवं प्रयत्न सीमित क्यो है।

हमें हमारी सम्पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग करना चाहिए। यदि हम ~~प्रय~~ प्रयत्नहीन हो जायेंगे, तो जीवन का उद्देश्य समाप्त हो जायेगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① उक्त पंक्तियों के माध्यम से यशपाल ने मनुष्य की सर्वश्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास किया है तथा मार्क्सवादी 'प्रोमेथस' की अवधारणा भी प्रतिबिम्बित है।

② उक्त गद्यांश की भाषा तत्सम खड़ी बोली है, जो सहज सुबोध है।

③ जीवन के संदर्भ में यही दृष्टि महावीर स्वामी ने भी प्रकट की है।

प्रासंगिकता - उक्त पंक्तियाँ वर्तमान संदर्भ में बेहद प्रासंगिक है, क्योंकि युवा वर्ग में लगातार बढ़ रही आत्म हत्या की घटनाएँ कहीं-न कहीं जीवन के किसी मोड़ पर असफल हो जाने के कारन ही हो रही है।

ऐसे में उन्हें पुरानी असफलता भूलकर आगे के जीवन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुभूति की प्रामाणिकता, अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव में लघुमानववाद एवं विसंगति बोध से युक्त कहानियों का संकलन है- एक दुनिया: समानान्तर (राजेन्द्र यादव)

इस संकलन की कहानी 'परिन्दे' (निर्मल वर्मा) से उद्धृत इस गद्यांश में यही विसंगति बोध व्यक्त है।

पात्र सोचता है कि वह अपने वतन से इतना दूर यहाँ है और पत्नी की याद में दूसरा विवाह नहीं करने पर अकेला भी है। ऐसे में यह अकेलापन उससे चिपक गया है।

यह अकेलापन उसे उसकी पुरानी जिंदगी से आगे नहीं बढ़ने देता है। और यह विसंगति सदा उसके साथ रहती है। इससे एक प्रकार का ट्रैजिक जीवन जीने को मजबूर है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

① अस्तित्ववादी विचारधारा का स्पष्ट चित्रण है. जिसमें व्यक्ति निर्णयों की अपूर्णता के कारण दुःखी है और विसंगति बोध का शिकार है।

② भाषा तत्समी खड़ी बोली है. जो प्रतीकात्मकता से युक्त है।

प्रासंगिकता - वर्तमान शहरी जीवन में जिस तरह नीरसता, दुख एवं अकेलेपन का संचार हो रहा है, ऐसे में आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी वास्तविकता को पहचाने।

व्यक्ति के 'स्व' (जो वह है) और जो उसे होना चाहिए में विसंगति ही अकेलेपन एवं अप्रामाणिकता का कारण है। अतः इससे बचते हुये वास्तविकता में जीना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

6. (क) क्या आप कतिपय आलोचकों के इस मत से सहमति रखते हैं कि गोदान मनुष्यों की नहीं मनुष्य की कथा है? अपना मत प्रकट करते हुए होरी की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। 20

सामाजिक यथार्थ का वस्तुनिष्ठ चित्रण, विद्रूपताओं का नग्न प्रदर्शन एवं मालिक-मजदूर प्रतीक के माध्यम से गरीब-गुरबा वर्ग का जीवन संघर्ष प्रेमचन्द ने गोदान में प्रकट किया है।

कुछ आलोचकों का मानना है कि गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास न होकर केवल एक मनुष्य होरी की कथा है। ~~किन्~~ उनके इस मत से संतुष्ट-असंतुष्ट होने से पूर्व गोदान का विश्लेषण आवश्यक है।

गोदान में अगर देखा जाये तो अधिकांश कथानक होरी के इर्द-गिर्द ही केन्द्रित है। होरी के जीवन संघर्ष को प्रेमचन्द ने जिस सूक्ष्मता से उकेरा है, वह किसी अन्य चरित्र के संदर्भ में उतनी गहराई नहीं है।

इस आधार पर कुछ आलोचक इसे केवल होरी के जीवन संघर्ष तक ही सीमित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रखते है किन्तु उनके इस मत से सहमत होना उचित नहीं है क्योंकि होरी एक विशिष्ट चरित्र न होकर वर्गगत चरित्र है।

होरी तत्कालीन एवं वर्तमान सभी किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। उसका जीवन संघर्ष उन सभी किसानों का संघर्ष है, जो गरीबी में जीवन जीने को अभिशप्त है।

होरी उन किसानों का प्रतिनिधित्व करता है, जो जी-तोड़ मेहनत करने के बावजूद ऋणग्रस्तता से नहीं उबर पाते, एक गाय नहीं खरीद पाते। होरी उन किसानों का प्रतीक है, जो सामाजिक जड़ताओं से निकलना तो चाहता है किन्तु निकल नहीं पाता।

होरी के अतिरिक्त गोबर, सुनिया, धनिया आदि भी अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है, तो साथ ही दलित चेतना, साम्प्रदायिकता की समस्या, उभरते पूँजीवाद आदि सभी का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चित्रण गोदान में है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गोदान तत्कालीन भारत का वस्तुनिष्ठ चित्रण है, न कि किसी एक व्यक्तित्व का चित्रण।

होरी का व्यक्तित्व उसे सामन्तवादी मानसिकता के करीब ले जाता है। वह एक जात-बिरादरी का पालन करने वाला, धर्मभीरु, संयुक्त परिवार में आस्था तथा खेती को मरजाद मानने वाला चरित्र है।

उसका इन सभी शोषक तंत्रों के प्रति सम्मान का भाव उसे विद्रोह से रोकता है किन्तु वह एक कठिन परिश्रमी एवं ईमानदार (कुछ स्थान को छोड़कर) व्यक्तित्व का धनी है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस कथन से स्पष्ट होती है -

"होरी की दशा दिन-दिन गिर रही थी। जीवन संघर्ष में सदा उसकी हार हुई थी किन्तु उसने कभी हिम्मत नही हारी।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सारांशतः कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द का होरी विशिष्ट जन सुलभ चरित्र को सुलभ सामान्य रूप प्रदान करने वाला एक दृढ़, मेहनती किसान है, जो अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है।

कृपया इस स्थान मे
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु समग्र राष्ट्रीय चेतना के रचना कार है। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता का पुट कभी-कभी इतना अधिक प्रासंगिक होता है कि वह अपनी काल की सीमा त्यागकर वर्तमान में भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारत-दुर्दशा नवजागरण चेतना से युक्त होकर तत्कालीन समय के भारत को एक नवीन राह दिखाकर राष्ट्रीय आन्दोलन को सशक्त करने का प्रयास है।

भारतेन्दु ने आत्म-आलोचना एवं आत्मगौरव के माध्यम से तत्कालीन समाज को आईना दिखाया है।

वे भारत की दुर्दशा के कारणों की खोज करते है और उन्हे अपने नाटक के माध्यम से प्रकट करते है।

भारत की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कारकों में वे <u>मदिरापान</u>, <u>धार्मिक आडम्बर</u> एवं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वैचारिक स्थूलता को सर्वोपरि मानते है।

वे धार्मिक आडम्बरो ने किस तरह समाज को विभक्त किया इससे दुखी है -

"शैव - शाक्त - वैष्णव मति अनेक प्रगटि चलाये.
जाति अनेकन करि. ऊँच और नीच बनाये।"

उनका उद्देश्य भारतीयो को आत्म-हीनता बोध से निकालकर प्राचीन गौरव पर ~~____~~ गर्व करने ~~__~~ तथा आगे बढ़ने का आत्मविश्वास पैदा करना था। वे तत्कालीन अन्य कवियों की भाँति भारत की प्राचीन गौरवमयी परम्परा को उद्घाटित करते है। यही भाव उनके आगे. गुप्त जी की भारत भारती व जयशंकर प्रसाद के नाटको मे उपस्थित है.

" सबके पहिले जेहि विधाता धान बल दीनो।
सबके पहिले जेहि विधाता सभ्य कीनो।"

भारतेन्दु ने तत्कालीन ब्रिटिश शासन की अंध - बुराई करने की बजाय उससे सीखने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए भी कहा -

"देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला जाता है।"

भारतेन्दु ने उद्योगों - धंधों का विकास कर गरीबी - दूर करने पर भी बल दिया है।

इस प्रकार भारत - दुर्दशा का मूल उद्देश्य तत्कालीन समस्याओं को दूर कर एक सुखद भविष्य का निर्माण करना है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''महाभोज' में चित्रित यथार्थ आदर्शोन्मुख यथार्थ है।' इस मत के संदर्भ में 'महाभोज' उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

सामाजिक विकृति, संवेदनहीन राजनीतिक दिखावटीपन एवं अवसरवादिता तथा बौद्धिक वर्ग की वैचारिक स्थूलता का संप्रेषण महाभोज में है।

महाभोज में मन्नू भंडारी ने बिसू-बिंदा-सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण के द्वारा एक ऐसे यथार्थ की कल्पना की है, जो सतत चलता रहता है। वे स्वयं समर्पण में लिखती भी है -

"उस दुर्निवार खतरनाक लपकती ~~अग्निलीक~~ अग्निलीक के लिए, जो बिसू और बिंदा तक रुकी नहीं रहती।"

कुछ समीक्षकों का मानना है कि यह व्यक्तित्वांतरण एक आदर्शोन्मुखी यथार्थ है, क्योंकि वास्तविक जीवन में ऐसा नहीं होता।

किन्तु इस विचार से सहमत होना

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संभव नहीं है, क्योंकि बिंदा तथा सक्सेना का व्यक्तित्वांतरण एक क्षणिक घटना नहीं अपितु एक पूरी प्रक्रिया है।

सक्सेना अपने सम्पूर्ण जीवन में आंतरिक द्वंद्व से संघर्ष करते हुये रहते है। यह आंतरिक संघर्ष जब उच्च स्तर पर पहुँच जाता है, तो यह व्यक्तित्वांतरण में प्रदर्शित होता है।

सक्सेना का व्यक्तित्वांतरण वस्तुत: मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में की भाँति है, जहाँ जानते हुये भी वह उस विद्रूपता के खिलाफ आवाज नहीं उठा पाता।

किन्तु बिंदा के द्वारा उसे वस्तुस्थिति से अवगत कराने पर, वह दा साहब, जोरावर सिंह तथा डी.आई.जी. जैसे गिद्धों के हाथों लोकतंत्र का विनाश नहीं होने देना चाहता।

सक्सेना का व्यक्तित्वांतरण आदर्श की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

वस्तु न होकर 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का ऐतिहासिक उत्तरदायित्व' है।

अतः कहा जा सकता है कि सक्सेना का व्यक्तित्वांतरण आदर्शोन्मुखी न होकर वास्तविक यथार्थ है, क्योंकि वर्तमान संदर्भ में भी अनेक उदाहरण सामने आते हैं, जो प्रशासनिक गुलामी को त्यागकर सामाजिक शोषण से मुक्ति की राह अपनाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation